International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 983-986

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 983-986
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2017
Accepted: 22-06-2017

डा. श्रीधर हेगडे
हिन्दी विभाग, फील्ड मार्शल के. एम. कार्यप्पा कालेज (मंगलूर विश्वविद्यालय की इकाई), मडीकेरी, कोडागु, कर्नाटक, भारत

Correspondence
डा. श्रीधर हेगडे
हिन्दी विभाग, फील्ड मार्शल के. एम. कार्यप्पा कालेज (मंगलूर विश्वविद्यालय की इकाई), मडीकेरी, कोडागु, कर्नाटक, भारत

गद्य में व्यंगात्मक विवेचना गद्य में व्यंगात्मक विवेचना

डा. श्रीधर हेगडे

सारांश
व्यंग्य मुख्यतया आधुनिक हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय घटना हैं। बीस्वीं शताब्दी के हिन्दी गद्य में अनेक शैलियाँ, जीवन दृष्टियों और विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ और विकास हुआ। हिन्दी साहित्य जगत मैं व्यंग्य के अंतर्गत हास्य रस को आत्मानन्द की अनुभूति का माध्यम माना गया हैं। वास्तव में व्यंग्य के द्वारा लेखक सदैव हँसी के माध्यम से दण्ड देना चाहता हैं। अतः स्वाभावतः उनमें कुछ चिडचिडापन आ जाता हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी साहित्य में व्यंग्य के स्वरुप पर विचार किया गया हैं।

मुख्य शब्द : व्यंग्य, हिंदी साहित्य, परिवेश, व्यंग्य शैली, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

प्रस्तावना
अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्द 'सेटायर' का हिन्दी रूप 'व्यंग्य' है। 'सेटायर' का जन्म दृश्य काव्य से हुआ। इसका विकास लेटिन भाषा के 'सेतुरा' शब्द से हुआ, जिसका आशय 'परनिन्दा' से लिया जाता था। आज सेटायर शब्द का प्रयोग समाज में छिपी बुराईयों और विसंगतियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। व्यंग्य की अपनी प्रक्रिया होती है। आज के व्यापक असंतोष की अभिव्यक्ति का माध्यम व्यंग्य सबसे अधिक विश्वसनीय और कारगर विपक्ष है। इसी के संदर्भ में डॉ. शिवकुमार मिश्र ने लिखा है, "व्यंग्य ऊपर से देखने में कितना भी आक्रामक, धारदार हथियार क्यों ना हो, उसकी नींव में हमेशा एक गहरी संवेदना होती है। जमीन से उगकर ही अपना समूची आक्रामकता के बावजूद व्यंग्य हमारा प्रिय बनता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य और व्यंग्य
आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास के साथ-साथ व्यंग्य ने भी अपना विकास किया है। खड़ी बोली को साहित्यिक भाषा का दर्जा दिलाने वालों ने व्यंग्य के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों पर अपने तीखे शब्द बाणों से प्रहार किया है, सत्ता प्रतिशठानों की लालफीता शाही, नेताओं की धूर्तता, पाशविकता, देशद्रोह और अनैतिकता, चुनावी हथकण्डे पुलिस का विभत्स आचरण, आधुनिक प्रेम का सतहीपन, जात-पात, बेकरी, गरीबी, अनगिनत विषयों की चीर-फाड़ व्यंग्यकारों ने की है।

प्रत्येक प्रकार के दोष-युक्त पहलू का सही चित्रण उस पर प्रहार और एक झटका व्यक्ति की चेतना को देना व्यंग्य का उद्देश्य होता है। व्यंग्य ने हिन्दी की सबसे बड़ी सेवा की है। वह यह कि उसने पाठकों का एक वर्ग तैयार किया है, जो व्यंग्य के बारीक इशारों को समझता है। व्यंग्य के लक्ष्य और गहराई तक पहुँचता है।

डॉ. धनंजय वर्मा ने व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा:

> "सच्चे और सार्थक व्यंग्य की यह ताकत होती है की वह मूल्यों की आपधापी और सक्रांति का चित्र ही नहीं देता, नए मूल्यों की तलाश और उनकी ओर इशारा भी करता है"।

व्यंग्य के बारे में डॉ. गौतम कहते हैं कि

> ""आज हिन्दी का व्यंग्य साहित्य पूर्व की तरह ना तो दरिद्र है और ना ही अस्तरीय, ना उसे फूटकर खाते में डाले जाने योग्य साहित्य कहकर उस की अपेक्षा की जा सकती है, अपितु आज का व्यंग्य अधिकाधिक तीक्षण, गंभीर एवं दूसरी साहित्य विधाओं की तुलना में सबसे अधिक समाजधर्मी साहित्य विद्या है, व्यंग्य आज एक सम्पूर्ण युग के माहौल और सन्दर्भ में प्रस्तुत होने लगा है"। - डॉ. अशोक गौतम

आज के साहित्यकारों में व्यंग्य एक प्रमुख विद्या के रूप में विद्यमान है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग में ही अपनी चेतना और प्रगतिशीलता के कारण व्यंग्य का उपयोग हो रहा है, जो वर्तमान तक अनवरत होता आ रहा है। व्यंग्य के संबंध में श्रीकांत चौधरी ने लिखा है,

> "व्यष्टि से समष्टि तक की सभी अप्राकृतिक मानवीय क्रिया कलापों के प्रति बौद्धिक विद्रोह ही व्यंग्य है, बुद्धि की पैनी और चुटीली प्रतिक्रिया है"।"
>
> - श्रीकांत चौधरी

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है, शैली है, अभिव्यक्ति का तीखापन है, साथ ही सुधार की प्रक्रिया का प्रारंभिक रूप भी है। यद्यपि भारतीय साहित्य के सन्दर्भ में व्यंग्य को उच्च कोटि का साहित्य कभी नहीं कहा गया है, पर एक उक्ति वैचित्रय और व्यंग्य-परक कथनों में व्यंग्य की स्वतः उपस्थित हो जाती है। व्यंग्य शब्द के बहुत से समानार्थी शब्द भी हैं, जिनको प्रायः लोग व्यंग्य के स्थान पर प्रयोग किया करते हैं जैसे कि हास, उपहास अथवा पैरोडी।

व्यंग्य का आधार है और इस सन्दर्भ में यह एक सार्थक स्वस्थ, बौंद्रिक विद्रोह है। व्यंग्य व्यक्तिगत कुण्ठा या संगास का परिणाम कभी नहीं हो सकता। "कबीर के शब्दों में कहें तो व्यंग्य की मार बाहर से तो नहीं दिखाई पड़ती पर भीतर से चकनाचूर कर देती है।" बाहर घावना दिखाई भीतर गीत या कविता में यह संभव है, पर व्यंग्य के लिए निज आवश्यक नहीं है।

कबीर की दृष्टि में धर्म, प्रेम से ओत-प्रोत प्रभु-प्राप्ति की भाव दशा विशेष है, फिर किसी की अगुवाई कैसी। इसिलए प्रख्यात समीक्षक रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कबीर के व्यंग्य कथनों को समाज से जोड़ते हुए कहा है कि "अपने कृतित्व को समाज से मिलाकर और अपने व्यक्तित्व को रचना से अभिन्न करके कबीर सच्चे अर्थों से सुकवि है।"

> पोथी पढ़-पढ़-जग मुआ, पंडित भया ना कोय।
> ढाईआखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। - कबीरदास

इस प्रकार कबीर की व्यंग्योंक्तियाँ सीधे समाज से जुडकर एक सुधारात्मक पहल करती दिखाई पड़ती हैं। उनके समक्ष मुख्य रूप से धर्म का विशाल साहित्य था। धर्मानुसार बना वह मानव समाज भी था। समाज की विकृतियाँ भी और रूढ़िवादी प्रवृत्तियाँ भी। कबीर ने किसी को बख्शा नहीं। सब पर उनका व्यंग्य चलता रहा, और सामाजिक सन्दर्भ में उनका साहित्य जुड़ता रहा। व्यंग्य साहित्य का सीधा संबंध समाज से है,उसकी विकृतियों और विदूपताओं से है, उसकी कमियों और अभावों से है। आधुनिक साहित्य के संदर्भ में व्यंग्य और ताकतवर होकर उभरा है। हरिशंकर परसाई के अनुसार "व्यंग्य विधा नहीं बल्कि स्पिरिट है।"

व्यंग्य समकालीन जीवन से जुड़े यथार्थ का गंभीर विश्लेषण है और उसके उद्घाटन का माध्यम भी है। अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है। सार्थक व्यंग्य में करूणा की अन्तर्धारा होती है। व्यंग्य शब्द दो अर्थ देता है। एक व्यंग्य का अर्थ है अभिधालक्षणा से हटकर व्यंजन ध्वनि जैसे –

> "करोड़ पति को लंकापति कहते हुए ऐसा कहना कि आज के लंकापति अयोध्या पति की तरह पूजे जाते हैं"।

लंकापति और अयोध्यापति प्रचलित शब्द अर्थ से हटकर इस वाक्य में नया अर्थ देने लगते हैं। तो बात कुछ और ही बन जाती है।
शब्द-षक्ति की दृष्टि से विचार करने पर हमें पता चलता है कि व्यंग्य में अभिधा ओर लक्षणा की अपेक्षा व्यंजना का सहारा लिया जाता है। बिहारी का निम्न दोहा इस उक्ति का प्रमाण हैः

"नहिं परागु नहिं मधु नाहिं विकासु इहीं काल"।

व्यंग्य प्रतिक्रियावान् मस्तिष्क की सीधी उपज है। वह अपने औपचारिकता का व्यवहार नहीं करता, जबकि साहित्य की अन्य अवधाओं में षिष्टता, में औपचारिकता का व्यवहार है। व्यंग्य अपनी वैदग्ध्यपूर्ण वक्र शैली में चेतना को प्रभावित करता है। वह विषय स्थितियों के खिलाफ उकसाता है। गहरे चोट करने वाली भाषा, बिना कहे सब कुछ कह देने वाली वैदग्ध्यपूर्ण सांकेतिकता ही व्यंग्य को साहित्कि ऊँचाई तक ले जाती है।
तुलसीदास ने निम्नलिखित पंक्तियाँ चाहे जिस संदर्भ में लिखी हो, साहित्य में व्यंग्य भाषा की परिभाषा को पूरी तहर रेंखांकित करती हैः-

"सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे"
हरधु अमित अति आखर थोरे।"

व्यंग्य का दूसरा अर्थ है - विरूपता दर्शन यह हमारे दोषों को, खामियों को, दुर्बलताओं को उभारकर सामने रखता है। विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अपने-अपने ढंग से की है।
डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार,

"आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है"।

शरद जोशी के अनुसार,

"जब तक दुनिया नहीं सँवरती यह व्यंग्य लिखा ही जाता रहेगा"।

मेरिडिथ के अनुसार,

"यदि आप हास्यापद का इतना अधिक मजाक उड़ाते हैं कि उसमें दयालुता ही समाप्त हो जाए, तो आप व्यंग्य की सीमाओं में प्रवेश कर आते हैं"।

व्यंग्य प्राचीन काल से ही एक कला के रूप में अस्तित्व में है। कई यूनानी नाटककार ने अपने समय की परम्पराओं को मजाक ग्रंथों में लिखा। आज का व्यक्ति प्रगतिशील है। व्यंग्य प्रगतिशील मनुष्य की सहज मानसिक प्रक्रिया है। यही कारण है कि व्यंग्य रचनाएँ दिनानुदिन बढ़ती जा रही हैं। कथा साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है, जिस साहित्य में व्यंग्य नहीं होता वह बहुत नीरस होता है, व्यंग्य साहित्य की बहुत ही समर्थ और विशेष रूप से सामाजिक विधा है, दिशा काल में जहाँ तक झूठे आडम्बर की और पाखण्ड की व्याप्ति है, वहाँ व्यंग्य का अपना एक क्षेत्र है।
किसी भी साहित्य रचना में व्यंग्य भाषा भी शब्द और अर्थ का एक अद्‌भुत समन्वय ही हैं, लेकिन व्यंग्य कर्म कमनीय नहीं होता है। स्वभवतः व्यंग्य - भाषा की ब्यानबाजी सतही और वर्णनामुखी नहीं होती, अपितु व्यंग्य की लोचदार लय से भींगी हुई गद्यभाषा एक कसावपूर्ण प्रभावान्वित की समर्थ पेशकश करती है।
आर्थर पोलार्ड ने साहित्य में व्यंग्य के बारे में लिखा हैः-

"संदर्भ में हल्का-सा परिवर्तन भी व्यंग्य के लिए घातक हो सकता है।"

भोलानाथ तिवारी ने लिखा हैं-

"सर्वोतम विचलन वही है जो या तो कुछ अतिरिक्त कहे या फिर रचना के मूल स्वर को रेखांकित करें।"

निष्कर्ष

व्यंग्य का प्राण यर्थार्थ है, वह विसंगतियों और विदूषपताओं की भूमि को अपना उत्सव मानकर पनपता है, तथा उसके स्वरूप के अनुसार हास्य,वाग-विदग्ध, वर्गीकृत, उपहास, कटाक्ष, कटूक्ति और वाक्दोष जैसे नाना

प्रकार के व्यंग्यास्त्रों का चयन करता है। व्यंग्यकार शल्य चिकित्सक है जल्लाद नहीं। उसकी चोट एक गुण्डे की चोट न होकर गुरू की चोट होती है, न्यायाधीश द्वारा दिया जाने वाला दण्ड हो उसका औचित्य है, आज की घनीभूत विसंगतियों के परिवेश में व्यंग्य ही एक कारगर हथियार के रूप में अपनी महत्ता एवं लोकप्रियता को भी सिद्ध करता हुआ विकसित हो रहा है। आज की राजनैतिक अपा-धापी कुर्सी के पीछे अंधी दौड़ चारित्रिक पतन, मल्य हीनता सामाजिक एवं मानवीय गुणों का हास, शोषण अन्याय, घिनौनी वृत्तियों, प्रवृत्तियों आये लोगों की त्रासदी और सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक मूल्यों में गिरावट, दोगलापन आदि के कारण व्यंग्य लेखन की अनिवार्य और उपयोगिता बढ़ती जा रही है। आज व्यंग्य अन्य विधाओं पर हावी होता हुआ, एक स्वतंत्र तथा पूर्ण विधाओ के रूप में अपनी प्रमुख स्थापनाओं का अहसास करा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गदय के विविध रुप, माजदा अस़द।
2. हिन्दी स्वतांत्रयोत्तर हास्य और व्यंग्य, बालेन्दु शेखर।
3. वीणा मासिक पत्र लेख, आनन्द गॉतम।
4. व्यंग्य साहित्य वर्तमान सन्दर्भ में एक विवेचन,श्रीकान्त चौधरी।
5. व्यक्तित्व एवं कृतित्वः- हरिशंकर परसाई, ऑमनोहरदेवलिया।
6. हिन्दी व्यंग्य का उपन्यास सॉलवा दशक, नंदलाल कल्ला।
7. रिमजिम, डॉ.रामकुमार वर्मा।
8. व्यंग्य शैली अप्रैल, शरद जोशी।
9. आधुनिक व्यंग्य का स्त्रोत और स्वरूप, डॉ. छविनाथ मिश्र ।
10. भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग- 3, ब्रजरत्नदास।
11. अपनी-अपनी बीमारी, हरिषंकर परसाई ।
12. रामचरित मानस, तुलसी दास ।
13. संटायर, आर्थर पोलार्ड।
14. शैली-विज्ञान. डॉ. भोलानाथ तिवारी।
15. मामला हाथी की पूँछ खींचने का, नीरज व्यास।
16. मानक हिन्दी कोष, रामचन्द्र वर्मा।
17. साहित्य सम्मेलन बैल-बाजार है, नीरज व्यास।